अराजक-पूंजीवाद

[स्रोत: द हिंदू](#)

अर्जेंटीना में राष्ट्रपति पद के चुनाव में **स्व-घोषित अराजक-पूंजीवादी** [जेवियर माइली](#) की जीत के साथ **"अराजक-पूंजीवाद"** (Anarcho-Capitalism) शब्द/पद हाल ही में चर्चा का विषय बन गया है।

- यह राजनीतिक दर्शन (अराजक-पूंजीवाद) **राज्य के उन्मूलन** का समर्थन करता है साथ ही यह प्रस्तावित करता है कि **निजी कंपनियाँ मुक्त बाज़ार में कानून व व्यवस्था का प्रबंधन करती हैं।**

अराजक-पूंजीवाद क्या है?

- **परिचय:**
  - अराजक-पूंजीवाद, राजनीतिक दर्शन तथा राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांत है जो **राज्य के स्थान पर बाज़ार द्वारा** व्यापक रूप से **विनियमित समाज** में वस्तुओं एवं सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान की वकालत करता है।
  - **मरी रोथबर्ड**, अराजक-पूंजीवाद का प्रणेता था, जो वर्ष 1950 के दशक के अमेरिकी स्वतंत्रतावादी आंदोलन का एक प्रमुख नेता था।
  - **अराजक-पूंजीपति इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मुक्त बाज़ार में निजी कंपनियाँ कुशलतापूर्वक पुलिसिंग एवं विधिक सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम हैं।**
  - दर्शन का तर्क है कि बेहतर उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने वाले निजी क्षेत्रों के समान, निजी पुलिसिंग और कानूनी प्रणालियाँ राज्य-एकाधिकार वाले समकक्षों से बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं।
    - अराजक-पूँजीवादी समाज में, व्यक्ति सुरक्षा और विवाद समाधान के लिये निजी पुलिस तथा अदालतों को भुगतान करते हैं।
    - ग्राहक संरक्षण द्वारा संचालित निजी कंपनियों को अधिक जवाबदेह माना जाता है, क्योंकि **असंतुष्ट ग्राहक प्रतिस्पर्धी सेवाओं को बदलते रहते** हैं।
  - अराजक-पूँजीपति प्रतिस्पर्धी बाज़ारों की वकालत करते हैं, यह दावा करते हुए कि वे **शीर्ष स्तरीय** और **लागत प्रभावी पुलिस** तथा **कानूनी सेवाओं की गारंटी** देते हैं। यह राज्य-वित्त पोषित प्रणालियों के विपरीत है, **जो ग्राहकों को उनकी प्राथमिकताओं और ज़रूरतों के अनुरूप सेवाओं का चयन करने की स्वतंत्रता प्रदान करती** है।
- **चिंताएँ:**
  - एक ही क्षेत्र में पुलिस और न्यायपालिका सेवाएँ प्रदान करने वाली कई **निजी कंपनियाँ सशस्त्र संघर्ष तथा अराजकता का कारण** बन सकती हैं।
  - **अमीरों के पक्ष में बाज़ार-आधारित प्रणाली** के बारे में संदेह पैदा होता है, जो उन्हें निजी कंपनियों को अधिक भुगतान करके न्याय से बचने की अनुमति देता है।
    - ऐसी आशंकाएँ मौजूद हैं कि **लाभ-संचालित प्रणाली गरीबों को हाशिये पर धकेल सकती हैं,** जिससे न्याय तक उनकी पहुँच सीमित हो सकती है।
  - आलोचकों को चिंता है कि **एक केंद्रीकृत प्राधिकरण के बिना**, निजी कंपनियाँ वित्तीय हितों के आधार पर न्याय को प्रभावित करने वाली **व्यापक जनता के प्रति जवाबदेह** नहीं हो सकती हैं और संभावित रूप से **न्याय की अखंडता** से समझौता कर सकती हैं।
  - एक केंद्रीकृत प्राधिकरण की अनुपस्थिति से **सतर्कता का खतरा बढ़ सकता** है, जहाँ व्यक्ति या समूह कानून को अपने हाथ में लेते हैं।
    - अराजक-पूंजीवाद **प्रीमियम सेवाएँ वहन कर सकने वाले लोगों** के लिये बेहतर कानूनी सुरक्षा प्रदान करने वाली **सामाजिक असमानताओं को खराब** कर सकता है।
  - एक मानकीकृत कानूनी ढाँचे की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप न्याय के मानक अलग-अलग हो सकते हैं, जिससे कानूनी परिणामों में अनिश्चितता और असंगतता पैदा हो सकती है।
- **चिंताओं पर अराजक-पूंजीवादी प्रतिक्रियाएँ:**
  - **निजी कंपनियों का लक्ष्य** सभी के लिये निष्पक्ष और सुलभ न्याय सुनिश्चित करते हुए **बड़े बाज़ार को संतुष्ट करना** होगा, न कि केवल अमीरों को।
  - प्रतिस्पर्द्धी बाज़ार में, निजी **कंपनियाँ ग्राहक संरक्षण पर निर्भर** रहती हैं, जो उन्हें जनता के प्रति जवाबदेह और उनकी ज़रूरतों के प्रति उत्तरदायी बनाती है।
    - निजी कंपनियाँ **निचले स्तर पर** मांग को पूरा करने का प्रयास कर सकती हैं, जिससे संभवतः गरीबों के लिये न्याय की बेहतर संभावनाएँ उपलब्ध होंगी।

- निजी कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्द्धात्मक दबाव से सामान्य नियमों पर समझौते होंगे, जिससे संघर्ष और संभावित सतर्कता को रोका जा सकेगा।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/anarcho-capitalism